17 मार्च 2009, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-61 / 2009-11

जैन
# पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

**पर की उपासना से बंधनों का नाश नहीं होता, बंधनों का नाश तो निज भगवान आत्मा की आराधना से ही होता है।**

**ह्न बिखरे मोती, पृष्ठ-195**

**वर्ष : 31, अंक : 24** सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये
मार्च (द्वितीय), 2009 प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

## पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं विधि-विधान प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

**जयपुर (राज.) :** यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 7 से 11 मार्च, 2009 तक पंच दिवसीय विशिष्ट शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें उपस्थित विद्वत् समुदाय को पंचकल्याणक प्रतिष्ठा विधि में निष्णात करने हेतु तीनों समय कक्षाओं का आयोजन हुआ।

इस अवसर पर संहितासूरि पण्डित नाथूलालजी इन्दौर के शिष्य प्रतिष्ठाचार्य पण्डित रमेशचन्दजी बांझल इन्दौर एवं प्रतिष्ठाचार्य बाल ब्र. अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री खनियांधाना द्वारा संबंधित विषयों पर मार्मिक कक्षायें ली गई। साथ ही पण्डित शांतिकुमारजी पाटील के भी मार्मिक सुझावों का लाभ मिला।

शिविर के माध्यम से पंचकल्याणक प्रतिष्ठाओं में दिनों-दिन बढती जा रही विकृति को किस तरह से आगमानुकूल ढंग से दूर किया जा सके - इस संदर्भ में विशेष चर्चाएं हुई। विशेष बात यह रही कि प्रशिक्षक विद्वानों द्वारा किसी भी व्यक्ति, क्षेत्र, संस्था की आलोचना किये बिना बहुत ही सरल भाषा में आगमसम्मत निर्दोष आम्नायानुसार प्रतिष्ठा हेतु तर्क संगत प्रशिक्षण दिया गया।

निश्चित ही ऐसे प्रशिक्षणों के माध्यम से समाज को श्रेष्ठ विधानाचार्य एवं प्रतिष्ठाचार्य उपलब्ध हो सकेंगे।

इस अवसर पर ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकचन्दजी भारिल्ल ने श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के विद्यार्थियों हेतु एक त्रिवर्षीय विधि-विधान पाठ्यक्रम तैयार करने की घोषणा की । जिसमें प्रथम वर्ष प्रतिष्ठा विशारद, द्वितीय वर्ष प्रतिष्ठा शास्त्री एवं तृतीय वर्ष प्रतिष्ठा आचार्य की उपाधि प्रदान की जायेगी ।

सभी प्रवेशार्थियों को विधि संबंधी जानकारी के अतिरिक्त प्रायोगिक प्रशिक्षण हेतु पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव में ले जाया जायेगा।

शिविर के मध्य तीनों समय कक्षाओं के अतिरिक्त **डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल** के **ध्यान का स्वरूप** विषय पर मार्मिक प्रवचन हुये। जिसके माध्यम से ध्यान के स्वरूप के बारे में चल रही विविध भ्रांतियों का आगम के आलोक में तर्क संगत समाधान किया गया। ●

## सम्मेद शिखर में एक साथ आठ शिलान्यास सम्पन्न

**सम्मेदशिखर –** यहाँ शाश्वत तीर्थराज श्री सम्मेदशिखरजी की तलहटी में तेरहपंथी कोठी के पीछे दिनांक 23 से 27 फरवरी तक अन्तर्राष्ट्रीय दि. जैन मुमुक्षु महासंघ के तत्त्वाधान में श्री कुन्दकुन्द कहान दिग.जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट मुम्बई द्वारा 20 तीर्थंकर विधान व 8 भव्य शिलान्यास समारोह सम्पन्न हुये।

इस अवसर पर गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के प्रतिदिन सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त देश-विदेश में ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर के समयसार की गाथा 39 से 44 पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला साथ ही गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन में समागत विषयवस्तु को डॉ. भारिल्ल ने जिसप्रकार खोला, उससे सारी समाज, विशेषकर अनन्तभाई बहुत प्रभावित हुये। आपके अतिरिक्त डॉ. उत्तमचंदजी सिवनी, बाल ब्र.अभिनंदनकुमारजी खनियांधाना, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, पण्डित अनिलकुमारजी भिण्ड आदि विद्वानों के सारगर्भित प्रवचनों का लाभ मिला।

इस अवसर पर शिलान्यास विधि प्रतिष्ठाचार्य बाल ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री दिल्ली के निर्देशन में पण्डित सुबोधजी शास्त्री शाहगढ, पण्डित कान्तिलालजी इन्दौर, पण्डित सुनीलजी धवल भोपाल आदि विद्वानों के द्वारा सम्पन्न कराई गई।

इस शिलान्यास महोत्सव में श्री पार्श्वनाथ मन्दिर का शिलान्यास श्री अनंतभाई ए.सेठ परिवार, मानस्तम्भ का शिलान्यास श्रीमती वीणावेन जे. मोदी परिवार मुम्बई, स्वाध्याय भवन का शिलान्यास श्री अजितभाई जैन परिवार बड़ौदा की ओर से उनके श्वसुर श्री आदिनाथ नखाते, सरस्वती भवन का शिलान्यास श्रीमती संगीताबेन भारतीबेन आर. कोठारी मुम्बई, आरोग्य भवन का शिलान्यास श्री विमलकुमारजी जैन दिल्ली, विद्वत-निवास संकुल का शिलान्यास श्री दिलीपभाई वेलजीभाई शाह जयपुर, विश्रान्तिगृह का शिलान्यास श्री नेमीचन्दजी पाण्ड्या कोलकाता एवं कार्यालय का शिलान्यास श्री भभूतमलजी भण्डारी बैंगलोर के करकमलों से किया गया।

ज्ञातव्य है कि इस अवसर पर डॉ. भारिल्ल की ध्यान का स्वरूप नामक नवीनतम कृति का वितरण किया गया तथा शिखरजी से लौटते समय कोलकाता में भी ध्यान विषय पर आपके एक व्याख्यान का लाभ मिला। ●

सम्पादकीय -

## चलते-फिरते सिद्धों से गुरु

24

(गतांक से आगे ...) ह्न पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

१६. रोगपरीषहजय में साधु 'नाना व्याधियों के होने पर भी उसके प्रतीकार की इच्छा नहीं करते।

'जो मुनिराज अपने पाप कर्मों के उदय से उत्पन्न हुए उदरशूल, बातज्वर, पित्तज्वर आदि दुःखों को देनेवाले ऐसे सैकड़ों असह्य रोगों की महा वेदना को बिना प्रतिकार अथवा बिना इलाज कराते हुए प्रसन्न रहते हैं, उन बुद्धिमानों के रोग-परीषहजय होता है।[१]'

१७. तृणपरीषहजय में 'तृणादि के निमित्त से वेदना के होने पर भी मन का निश्चल रहना, कठोर कंकर, काँटा, तीक्ष्ण मिट्टी और शूल आदि के बिंधने से या गड़ने से पैरों में वेदना के होने पर भी उसमें जिसका चित्त उपयुक्त नहीं है तथा चर्या, शय्या और निषद्या में पीड़ा का परिहार न करने के लिए जिसका चित्त निरन्तर प्रमादरहित है; उसके तृणस्पर्शपरीषहजय होता है।'

१८. मलपरीषहजय इसमें साधु 'स्व और पर के द्वारा क्रमशः मल के अपचय और उपचय के संकल्प नहीं करते।

अपकायिक जीवों की पीड़ा का परिहार करने के लिए जिसने मरणपर्यन्त अस्नानव्रत स्वीकार किया है ह्न ऐसे परम अहिंसक साधु के सूर्य की किरणों के ताप से उत्पन्न हुए पसीने में पवन के द्वारा लाया गया धूलिसंचय चिपक गया है, कोढ़, खाज और दाद के होने से खुजली के होने पर भी जो खुजलाने, मर्दन करने और दूसरे पदार्थ से घिसनेरूप क्रिया से रहित हैं, तथा जो सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्ररूपी विमल जल के प्रक्षालन द्वारा कर्ममलपंक को दूर करने के लिए निरन्तर उद्यतमति हैं, उनके मलपीड़ासहन या मल-परीषहजय कहा गया है।[२]'

जो वीतराग मुनिराज जीवों की दया पालन करने के लिए, राग को नष्ट करने के लिए और पापकर्मरूपी मल को नाश करने के लिए स्नान आदि को दूर से ही त्याग देते हैं और संस्कार या प्रक्षालन आदि से रहित आधे जले हुए मुरदे के समान मल, पसीना, नाक का मल आदि से लिप्त हुए शरीर को धारण करते हैं, उसको मल-परीषहजय कहते हैं।[३]'

१९. सत्कारपुरस्कार-परीषहजय में 'मान और अपमान में तुल्यभाव रखते हैं, उनके सत्कार-पुरस्कार की भावना नहीं होती।'

१. अर्थप्रकाशिका, ९/९ २. अर्थप्रकाशिका, ९/९, पृष्ठ ४१४
३. सर्वार्थसिद्धि एवं वार्तिक ९/९

मुझे लोग प्रणाम नहीं करते हैं, मेरी भक्ति नहीं करते हैं, हर्षपूर्वक खड़े होकर आसनादि नहीं देते हैं ह्न ऐसे परिणाम जो साधु कभी नहीं करते हैं, जिन्हें अपने आत्मकल्याण का ही ध्यान रहता है, जो लोगों से सत्कार-पुरस्कार की इच्छा नहीं रखते; उस साधु को सत्कार-पुरस्कार-परीषहजय होता है।

२०. प्रज्ञा-परीषहजय में साधु को प्रज्ञा (बुद्धि) का विकास होने पर भी प्रज्ञामद नहीं होता। तात्पर्य यह है कि प्रज्ञापरीषहजय उन्हें होता है जो ज्ञान की अधिकता होने पर भी मान नहीं करते।

मैं अंग, पूर्व और प्रकीर्णक शास्त्रों में विशारद हूँ; शब्दशास्त्र, न्यायशास्त्र और अध्यात्मशास्त्र में निपुण हूँ; मेरे सामने अन्य लोग सूर्य की प्रभा से अभिभूत हुए जुगनू के समान बिल्कुल सुशोभित नहीं होते हैं; इसप्रकार विज्ञानमद का निरास होना प्रज्ञा-परीषहजय जानना चाहिए।

२१. अज्ञानपरीषहजय में साधु 'अज्ञान के कारण होनेवाले अपमान की परवाह नहीं करते। एवं ज्ञान की अभिलाषा नहीं करते।

''जो मुनि स्वल्पज्ञानी हैं, उनके लिए अन्य दुष्ट लोग कहें कि 'यह अज्ञानी है, परमार्थ को कुछ नहीं जानता, पशु के समान हैं' इसप्रकार कड़वे वचन आदि सुनने पर तत्त्वज्ञान के बल से अपमान का अनुभव नहीं करते हैं तथा 'मैं इसप्रकार का दुर्धर और पापरहित घोर तपश्चरण करता हूँ तो भी मुझे ज्ञान का कुछ भी अतिशय प्रगट नहीं होता, इसप्रकार जो अपने मन में कभी कलुषता नहीं लाते; उसको अज्ञान-परीषहजय कहते हैं।

२२. अदर्शनपरीषहजय में 'दीक्षा लेना आदि अनर्थक है', इस प्रकार मानसिक विचार नहीं होने देते।

शास्त्रों में यह सुना जाता है कि देव लोग श्रेष्ठ योग धारण करनेवाले महा तपस्वियों के लिए प्रातिहार्य प्रगट करते हैं, उनका अतिशय प्रगट करते हैं; परन्तु यह कहना प्रलापमात्र है, यथार्थ नहीं है; क्योंकि मैं बड़े-बड़े घोर तपश्चरण तथा दुर्धर अनुष्ठान पालन करता हूँ तो भी देव लोग मेरा कोई प्रसिद्ध अतिशय प्रगट नहीं करते, इसलिए कहना चाहिए कि यह दीक्षा लेना भी व्यर्थ है।' इसप्रकार के कलुषित संकल्प-विकल्प को जो मुनिराज अपने सम्यग्दर्शन की विशुद्धि से कभी नहीं करते हैं, उसको अदर्शन परीषहजय कहते हैं।

### परीषह और कायक्लेश में अन्तर ह्न

जो अपने आप सहज होता है, प्राकृतिक होता है, वह परीषह है और जो स्वयं आमंत्रित किया जाता है वह कायक्लेश है ह्न जैसे

ह्न डांस-मच्छर, सर्दी-गर्मी प्राकृतिक है; अतः यह परीषह है और गर्मी में पर्वत पर जाना सर्दी में नदी किनारे जाकर तप करना यह कायक्लेश है।

एक साथ एक मुनि के उन्नीस परीषह हो सकते हैं।

''केवली के क्षुधादि परीषह नहीं होते, क्योंकि ह्न १. केवली जिन के शरीर में निगोद और त्रस जीव नहीं रहते। वे परम औदारिक शरीर के धारी होते हैं; अतः भूख, प्यास और रोगादिक का कारण नहीं रहने से उन्हें भूख, प्यास और रोगादिक की बाधा नहीं होती। देवों के शरीर में इन जीवों के न होने से जो विशेषता होती है, उससे अनन्तगुणी विशेषता इनके शरीर में उत्पन्न हो जाती है।

२. असाता की उदीरणा छठवें गुणस्थान तक ही होती है, आगे नहीं होती; इसलिए उदीरणा के अभाव में वेदनीय कर्म क्षुधादिरूप कार्य का वेदन कराने में असमर्थ है। जब केवली जिन के शरीर के पानी और भोजन की ही आवश्यकता नहीं रहती, तब इनके न मिलने से जो क्षुधा और तृषा होती है, वह उनके हो ही कैसे सकती है?

३. सुख-दुःख का वेदन वेदनीय कर्म का कार्य होने पर भी वह मोहनीय की सहायता से ही होता है, चूँकि केवली जिन के मोहनीय का अभाव होता है; अतः यहाँ क्षुधादिरूप वेदनाओं का सद्भाव मानना युक्तिसंगत नहीं है। इससे निश्चित होता है कि केवली के क्षुधादि परीषह नहीं होते। बस आज इतना ही। ॐ नमः।

इसप्रकार आज आचार्यश्री ने अपने प्रवचन में बाईस परीषहों की चर्चा करके श्रोताओं को साधुओं की परीषहजय से उत्पन्न आनन्दानुभूति से परिचित कराया। परीषहजय सम्बन्धी इस विवेचन से हमें ज्ञात होता है कि मुक्तिमार्ग के साधक वीतरागी सन्तों की अन्तर पवित्रता तो परमोत्कृष्ट है ही; साथ ही उनका बाह्य जीवन भी वीतरागता का जीवन्त आदर्श है। वे परीषहों की विपरीत परिस्थितियों में भी स्वरूप-साधना में मेरुवत् अचल रहते हैं। उनके इस आदर्श कष्ट सहिष्णु जीवन से हम भी कष्ट सहिष्णु बनें, अहिंसक जीवन जिएँ। सोचें, कि यदि पुनः पराधीन पशु जीवन मिल गया तब तो यह सब सहना ही पड़ेगा। यदि स्वाधीनता में सहन किया तो कर्मों की निर्जरा होगी। अतः विपरीत संयोगों एवं परिस्थितियों की इन उदयाधीन विपरीत परिस्थितियों में भी हम अपने लक्ष्य को शिथिल न पड़ने दें और निरन्तर ही अपने लक्ष्यपूर्ति की दिशा में अपने कदम आगे बढ़ाते रहें। ●

## निबंध प्रतियोगिता

दिगम्बर जैन महासमिति राजस्थान अंचल द्वारा श्री चांदबाई सेठी पारमार्थिक ट्रस्ट जयपुर के सौजन्य से हायर सैकेण्डरी व स्नातक स्तरीय विद्यार्थियों के लिए एक अखिल भारतीय निबंध प्रतियोगिता आयोजित की गई है, जिसका विषय है '**आतंकवाद का कारण धार्मिक उन्माद या राजनीति?** और वैश्विक आतंकवाद का समाधान कैसे हो ?'

निबंध प्रतियोगिता के नियम एवं शर्तें निम्न प्रकार है-

1. निबन्ध 1000 से अधिक शब्दों का नहीं होना चाहिए।

2. निबन्ध प्राप्त होने की अन्तिम तिथि 15 अप्रैल 2009 है। निबन्ध की प्रविष्टियां निम्न पते पर भेजी जायेंगी :-

(1) श्री वीरेन्द्रकुमार जैन, 8, अरविन्द पार्क, टोंक फाटक, जयपुर

(2) श्री सुरेन्द्रकुमार पाटनी, डी-127, सावित्री पथ, बापूनगर, जयपुर

3. दिनांक 15 अप्रैल 2009 तक आये हुये समस्त निबंधों का आंकलन, संचालन कमेटी के मनोनीत सदस्यों द्वारा करवाया जायेगा और उसका निर्णय अन्तिम होगा और उनके निर्णय के विरुद्ध कहीं भी कोई अपील नहीं होगी।

4. परिणाम 30 मई 2009 तक घोषित किये जायेंगे।

5. प्रथम पुरस्कार 4000 रुपये एक छात्र व एक छात्रा - प्रत्येक को। द्वितीय पुरस्कार 3000 रुपये एक छात्र व एक छात्रा प्रत्येक को। तृतीय पुरस्कार 2000 रुपये एक छात्र व एक छात्रा प्रत्येक को। इनके अतिरिक्त प्रतिभागियों की संख्या के आधार पर कुछ सांत्वना पुरस्कार भी दिये जायेंगे, जिसका निर्धारण संचालन समिति करेगी। प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले छात्र, छात्राओं की पर्याप्त प्रविष्टियां नहीं आने पर उनके पुरस्कारों के पुन: निर्धारण का सम्पूर्ण अधिकार संचालन समिति को होगा।

6. पुरस्कार वितरण जयपुर में आयोजित समारोह में किया जायेगा।

7. निबन्ध के साथ स्कूल/ महाविद्यालय का प्रमाणपत्र आवश्यक है, जो पुष्टि करे कि निबन्ध भेजनेवाला विद्यार्थी संस्था का नियमित छात्र है, प्रतिभागी प्रतियोगिता के लिए आवश्यक अर्हताएं पूरी करता है या नहीं - इसका निर्णय संचालन समिति करेगी और इसका निर्णय अन्तिम होगा।

8. प्रतियोगिता से सम्बन्धित किसी भी तरह के विवाद के निस्तारण के लिए न्यायिक क्षेत्र केवल जयपुर शहर ही होगा। **ह्न सुरेन्द्रकुमार पाटनी**

## विधान एवं भव्य त्रय शिलान्यास सम्पन्न

**ग्वालियर (म.प्र.) :** यहाँ अनाजमंडी गंज में श्री वासूपूज्य दि. जैन मंदिर में दिनांक 15 फरवरी को प्रात: श्री कुन्दकुन्द स्वाध्याय भवन का शिलान्यास श्री मुकेश जैन पुत्रश्री विनोदजी शर्राफ मुरार (जैना ज्वैलर्स) परिवार द्वारा, जिनायतन का शिलान्यास श्री ज्ञानचन्द दिनेशकुमारजी नयागंज द्वारा तथा पं.धन्नालाल वी.वि.पाठशाला का शिलान्यास श्री अमरचन्दजी जैन नागेन्द्रजी जैन द्वारा किया गया।

इस अवसर पर सम्मेदशिखर विधान एवं शिलान्यास संबंधी कार्य पण्डित श्यामलालजी विजयवर्गीय व पण्डित कांतिजी इन्दौर ने कराये।

मंगलाचरण पण्डित पवनजी शास्त्री व पण्डित विनीतजी शास्त्री ने किया। संचालन पण्डित शुद्धात्मजी शास्त्री मौ ने किया। 14 फरवरी को श्री वासूपूज्य मंदिर सोड़ा का कुंआ पर सामूहिक पूजा का आयोजन किया गया। **ह्न नागेन्द्र जैन**

## पाठकों के पत्र

१ . **पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल कृत 'नींव का पत्थर'** पुस्तक को पढकर **भोपाल से श्री राजमलजी पवैया** लिखते हैं कि – 'प्रस्तुत पुस्तक को एक ही दिन में पढकर पवित्र हो गया। जीवराज का पूरा जीवन जाना और उसका सुखद अंत भी जाना। जीवराज जैसी प्रारंभिक दशा सभी जीवों की है; मेरी भी है। जो जीव इस पुस्तक को पढेगा, वह तुरंत ही सत्पथ पर आ जाएगा। इतनी अधिक सुन्दर रचना के लिए मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार करें। वास्तव में आप जैन समाज के सुन्दर श्रेष्ठ रत्न है।'

2. **डॉ. शुद्धात्मप्रभाजी टड़ैया** द्वारा रचित कृति **जैनदर्शनसार** को पढ़कर उदयपुर से श्री नरेशकुमारजी जैन लिखते हैं कि ह्न 'मैं अपने ऑफिस में खाली समय में आपकी कृति जैनदर्शनसार का स्वाध्याय कर रहा था। उक्त कृति में आपने सम्पूर्ण जैनदर्शन को गागर में सागर की तरह भरने का प्रयास किया है। यह सभी आयु वर्ग के लिये अलग ही विधा में लिखी गई है। डॉ. भारिल्ल की तरह ही आपके मुख में भी सरस्वती का निवास है।

आपकी चिन्तन धारा को मैंने पूर्व में भी आपकी अन्य कृतियों जैसे ह्न विचार के पत्र विकार के नाम, राम कहानी तथा जैन नर्सरी आदि में देखा है। भविष्य में भी आपकी कृतियाँ धर्म के रसिक जीवों के परिणामों को निर्मल करने में निमित्त होंगी ह्न इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।'

## तीन-तीन परमागम कण्ठस्थ

**जयपुर :** श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के अनेक विद्यार्थियों ने इस वर्ष आचार्य कुन्दकुन्द के परमागमों को याद करने का संकल्प किया, उनमें से तीन विद्यार्थियों ने तीन–तीन परमागमों को कण्ठस्थ करके दिनांक 19 फरवरी को मंच पर प्रस्तुत किया।

शास्त्री अंतिम वर्ष से अजयकुमार जैन ने समयसार, प्रवचनसार और नियमसार नामक ग्रंथ याद किए व सुनाए। इसीप्रकार सजल जैन (शास्त्री द्वितीय) वर्ष ने भी उपरोक्त परमागम कण्ठस्थ याद करके सुनाए तथा शास्त्री प्रथम वर्ष से राहुल जैन ने समयसार, नियमसार और पंचास्तिकाय संग्रह नामक ग्रंथ सुनाए।

अनेक विद्यार्थियों में इसप्रकार ग्रन्थ याद करने का उत्साह है। स्मारक परिवार ने प्रत्येक विद्यार्थी को 11000/– की राशि से प्रोत्साहित किया है।

जैनपथ प्रदर्शक एवं महाविद्यालय परिवार इनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है।

## एक सौ सत्तर तीर्थंकर विधान सम्पन्न

**केलवाड़ा (राज.) :** यहाँ श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर प्रांगण में दिनांक 25 व 26 फरवरी, 09 को वेदी प्रतिष्ठा की छठवीं वर्षगाँठ के अवसर पर श्री पद्मचंदजी गुलाबचंदजी दोशी परिवार, पीसांगन की ओर से एक सौ सत्तर तीर्थंकर विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा के मोक्षमार्गप्रकाशक ग्रंथ के आधार से हुये प्रवचनों के साथ ही अभिषेकजी शास्त्री द्वारा नवीन बंध विचार व चार अभाव विषयों पर ली गई कक्षाओं का लाभ मिला।

विधि–विधान के समस्त कार्य पण्डित कमलचंदजी के निर्देशन में श्री चंपालालजी निवाई, श्री अभिषेकजी शास्त्री व सम्पूर्ण जैनसमाज के सहयोग से सम्पन्न किये गये।

## नये युग की आध्यात्मिक क्रान्ति का उदय

आपको बताते हुये हर्ष है कि श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के स्नातक श्री गौरवजी शास्त्री एवं श्री सौरभजी शास्त्री इन्दौर द्वारा टेली कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से अमेरिका, कनाड़ा आदि देशों में धार्मिक कक्षायें संचालित की जा रही हैं।

इसी क्रम में इस बार 31 जनवरी, 09 से तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल कृत बालबोध पाठमाला से तत्त्वज्ञान पाठमाला तक के प्रमुख विषयों को रोचक शैली में समझाया जा रहा है।

इसमें नूतन प्रयोग के तौर पर उक्त विषयों को अंग्रेजी भाषा में भी संचालित किया जा रहा है, जिससे वहाँ के यंग तथा प्रोफेशनल लाभान्वित हो रहे हैं तथा हिन्दी भाषा से अनभिज्ञ जन भी जैनदर्शन के आत्मरहस्य को समझ रहे हैं।

अध्ययन सामग्री की प्राप्ति तथा अधिक जानकारी के लिये आप **www.jainism.us** पर लॉग इन कर सकते हैं। इस साइट पर प्रत्येक कक्षा की ऑडियो रिकार्डिंग भी उपलब्ध है।

सम्पर्क ह्न 09329796325


### जैनपथप्रदर्शक के स्वामित्व का विवरण
### फार्म नं. 4 नियम नं. 8

| | | |
|---|---|---|
| समाचार पत्र का नाम | : | जैन पथप्रदर्शक (हिन्दी) |
| प्रकाशन स्थान | : | श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए–4, बापूनगर, जयपुर–15 (राज.) |
| प्रकाशन अवधि | : | पाक्षिक |
| मुद्रक | : | श्री प्रमोदकुमार जैन (भारतीय) जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम.आई.रोड, जयपुर (राज.) |
| प्रकाशक का नाम | : | ब्र. यशपाल जैन (भारतीय) पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए–4, बापूनगर, जयपुर –15 (राज.) |
| सम्पादक का नाम | : | श्री रतनचन्द भारिल्ल (भारतीय) श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए–4, बापूनगर, जयपुर –15 (राज.) |
| स्वामित्व | : | पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए–4, बापूनगर, जयपुर –15 (राज.) |

मैं ब्र. यशपाल जैन एतद् द्वारा घोषणा करता हूँ कि मेरी अधिकृत जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं।

दिनांक : 17–3–2009

प्रकाशक :
**ब्र. यशपाल जैन**
ट्रस्टी, पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर

अनुकरणीय पहल ह्न

## बोरीवली पाठशाला का प्रगति प्रतिवेदन

श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन मुमुक्षु ट्रस्ट, बोरीवली के अंतर्गत चल रही श्री वीतराग–विज्ञान पाठशाला की गतिविधियों को सूचित करते हुये श्रीमती मेघा शाह लिखती हैं कि ह्न

'इस पाठशाला की शुरूआत हमने सितम्बर 07 में दशलक्षण पर्व के बाद की थी, जिसमें 103 बच्चों ने एडमिशन लिया था। इसके साथ ही हमने महिलाओं के लिए भी पाठशाला शुरू की थी। दोनों पाठशालाओं ने इस वर्ष सफलतापूर्वक दशलक्षण पर्व में अपना एक साल पूरा कर लिया। टोडरमल स्मारक, जयपुर से संचालित वीतराग–विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड के माध्यम से हमने मार्च 08 और जुलाई 08 में बच्चों और महिलाओं की बालबोध–1 की परीक्षा ली, जिसमें सभी विद्यार्थी उत्तीर्ण हुए।

बच्चों को पाठशाला की ओर आकर्षित करने के लिए हमने बस सेवा व पुरस्कार वितरण भी प्रारम्भ किया। अध्ययन के अतिरिक्त पाठशाला द्वारा जो गतिविधियाँ संचालित की गईं वे इसप्रकार हैं ह्न

1. दीपावली पर बच्चों द्वारा पटाखा विरोधी संदेश के प्रचार हेतु नाटक का मंचन किया, जिससे प्रभावित होकर 108 बच्चों ने पटाखे नहीं फोडने का नियम लिया। सभी को आकर्षक पुरस्कार दिये गये।

2. पाठशाला द्वारा 5–7 वर्ष के बच्चों के लिए महीने में एक बार ड्रॉयिंग क्लास चलती है, जिसमें उन्हें धार्मिक चित्र बनाना सिखाए जाते हैं।

3. जनवरी 08 में बच्चों को पिकनिक हेतु धार्मिक स्थल लेकर गए जहाँ बच्चों ने सुबह जिनेन्द्र भगवान का प्रक्षाल–पूजन किया।

इस वर्ष पाठशाला में, दशलक्षण पर्व पर 40 नए बच्चों ने एडमिशन लिया, महिलाओं के लिए भी इस साल से बालबोध भाग ह्न1 व 2 तथा बच्चों के लिये नर्सरी, केजी–1, जी. के.1, बालबोध भाग–1,2 व 3 की कक्षाओं के अतिरिक्त हर रविवार को पूजन प्रशिक्षण की कक्षायें भी संचालित की जा रही हैं।

दशलक्षण पर्व पर हमने एक प्रदर्शनी भी रखी, जिसमें बच्चों और उनके माता–पिता ने धार्मिक प्रोजेक्ट तथा चित्र बनाए थे।

दिसम्बर 08 में बच्चों के लिए दो दिन का शिविर आयोजित किया, शिविर के दौरान विविध प्रतियोगिताएँ भी रखीं।

पाठशाला को व्यवस्थित रूप से चलाने के लिए हम पेरेन्ट्स और टीचर्स की मीटिंग भी आयोजित करते हैं। इसके अलावा, बच्चों को नए–नए तरीकों से पढाने के लिए शिक्षकों को भी ट्रेनिंग दी जाती है। ज्यादा से ज्यादा बच्चे धार्मिक शिक्षा प्राप्त कर अपना जीवन सफल बनाए, उसके लिए हमारे निरंतर प्रयास चलते रहते हैं।

पिछले साल से लेकर अब तक के हमारे सभी कार्यक्रमों में बच्चों ने हिस्सा लेकर उसे सफल बनाया है। हमारी इस पाठशाला को सफलता के शिखर तक पहुँचाने में हमारे बच्चों, शिक्षकों, हमारे ट्रस्ट तथा विशेष रूप से डॉ. शुद्धात्मप्रभाजी टड़ैया और टोडरमल स्मारक (जयपुर) का अपार सहयोग रहा है। अंत में यही आशा है कि यह पाठशाला सालों–साल चलती रहे।' ●

श्री महावीर विद्या निकेतन नागपुर –

## शिक्षा के साथ संस्कार भी

सदाचार और नैतिक जीवन की प्रेरणा देने हेतु आध्यात्मिकसत्पुरूष गुरूदेवश्री कानजी स्वामी के प्रभावना योग से श्री कुन्दकुन्द दिगम्बर जैन स्वाध्याय मण्डल ट्रस्ट, नागपुर द्वारा नवनिर्मित श्री वीतराग–विज्ञान भवन में श्री महावीर विद्या निकेतन (छात्रावास) का प्रारंभ सन् 2008 में हो चुका है, जो अभूतपूर्व सफलता के साथ दिन–प्रतिदिन प्रगति कर रहा है।

सर्व सुविधायुक्त इस विद्या निकेतन में लौकिक अध्यापन के साथ–साथ धार्मिक अध्यापन और संस्कारों का बीजारोपण स्थानीय विद्वानों के अतिरिक्त विशिष्ट विद्वानों की सहायता से किया जाता है, जिससे बालक का सर्वांगीण विकास हो सके। इन विद्यार्थियों को आवास एवं भोजन की समुचित सुविधा ट्रस्ट द्वारा नि:शुल्क उपलब्ध कराई जाती है। छात्रों को नगर के प्रतिष्ठित स्कूलों में हायर इंग्लिश तथा सेमी इंग्लिश (हिन्दी, मराठी) मीडियम से लौकिक शिक्षा दी जाती है, इसके लिए कक्षा 8 से 10वीं तक का त्रिवर्षीय पाठयक्रम निश्चित किया गया है।

प्रथम सत्र में देश के विभिन्न नगरों से आये 18 विद्यार्थी अध्ययन कर रहे हैं। आगामी सत्र 2009–2010 हेतु 20 विद्यार्थियों को कक्षा आठवीं में प्रवेश दिया जाना सुनिश्चित हुआ है। यहाँ का अध्ययन सम्पन्न होने के बाद आगे के अध्ययन हेतु संस्था से सम्बद्ध देश की अग्रणीय अन्य संस्थाओं में भेजने की उन्हें प्रेरणा दी जाएगी।

इस सत्र में प्रवेश हेतु इच्छुक प्रवेशार्थियों की समस्त प्रवेश प्रक्रिया प्रत्यक्ष साक्षात्कार के माध्यम से नागपुर में सम्पन्न होगी। इसके लिये दिनांक 31 मई से 7 जून 2009 तक पात्रता शिविर आयोजित किया जा रहा है, जिसमें उपस्थित होना अनिवार्य है। यदि आप अपने बालक का भविष्य उज्ज्वल बनाना चाहते हैं तो शीघ्र ही सत्र 2009–10 में कक्षा आठवीं में प्रवेशयोग्य अपने बालक के प्रवेश हेतु दिनांक 30 अप्रैल, 2009 तक प्रवेश फार्म भरकर निम्न पते पर भेजें। **ह्न सम्पर्क सूत्र**

श्री महावीर विद्या निकेतन, वीतराग–विज्ञान भवन, नेहरू पुतला, इतवारी, नागपुर–02 (महा.) फोन–0712–2772378, 2766369–अशोक जैन, मो. 9371270638–जयकुमार देवड़िया, 9373289447–सुदीप जैन, 09890582420–जितेन्द्र राठी

## कलशारोहण सानन्द सम्पन्न

**रत्नौद (म.प्र.) :** यहाँ दिनांक 22 से 24 जनवरी, 09 तक श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन बड़ा मंदिर में कलशारोहण कार्यक्रम के साथ रत्नत्रय विधान का अयोजन किया गया।

इस अवसर पर ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियाँधाना, पण्डित जयकुमारजी एवं पण्डित देवेन्द्रजी शास्त्री अकाझिरी के मोक्षमार्गप्रकाशक ग्रंथ पर हुये प्रवचनों का लाभ मिला। बालकक्षा पण्डित सुनीलजी देवरी ने ली।

कलशारोहण स्थानीय विधायक श्री देवेन्द्र जैन पत्तेवालों के करकमलों से सम्पन्न हुआ। **ह्न दिनेश जैन, रत्नौद**

## मोक्षमार्ग प्रकाशक का सार 24

## पाँचवाँ प्रवचन

– डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

मोक्षमार्गप्रकाशक नामक शास्त्र में प्रतिपादित विषयवस्तु की चर्चा चल रही है। चौथे प्रवचन में चतुर्थ अधिकार में समागत विषयवस्तु की आरंभिक चर्चा हुई; जिसमें संसार के दु:खों के कारण के रूप में अगृहीत मिथ्यादर्शन का स्वरूप स्पष्ट किया जा रहा है।

अबतक यह स्पष्ट किया गया है कि जीवादि तत्त्वार्थों का श्रद्धान ही सम्यग्दर्शन है। अत: सम्यग्दर्शन की प्राप्ति के लिए जीवादि तत्त्वार्थों को जानना अत्यन्त आवश्यक है।

यहाँ एक प्रश्न संभव है कि जीवादि तत्त्वार्थों में तो सम्पूर्ण जगत आ जाता है। जीव में सभी जीव आ गये; अजीव में पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश और काल सभी अजीव द्रव्य आ गये। आस्रव, बंध, संवर, निर्जरा और मोक्ष तथा पुण्य-पाप में जीव की सभी विकारी और अविकारी पर्यायें आ गईं। पुद्गल में भी पुद्गल की अनेक पर्यायें आ गईं। एक तरह से सम्पूर्ण जगत ही आ गया। इतना सब जानना तो केवलज्ञानी के ही हो सकता है। तो क्या सम्यग्दर्शन केवलज्ञान होने के बाद होगा ?

इसी प्रश्न के स्पष्टीकरण में ही तो पण्डित टोडरमलजी ने तत्त्वों के साथ 'प्रयोजनभूत' पद का प्रयोग किया है। तात्पर्य यह है कि यहाँ सभी द्रव्यों को, सभी गुण और पर्यायों के साथ युगपत् जानने की बात नहीं है; यहाँ तो जिन गुण और पर्यायों के साथ जीवादि को जानना आत्महित की दृष्टि से प्रयोजनभूत है, मात्र उन्हें ही जानना है, सबको नहीं।

अनन्त जीव, अनन्तानन्त पुद्गल, एक धर्म, एक अधर्म, एक आकाश और असंख्यात कालाणु ह्न इसप्रकार इस लोक में छह प्रकार के अनन्तानंत द्रव्य हैं। प्रत्येक द्रव्य में अनन्त गुण हैं, प्रत्येक गुण में अनन्तानंत पर्याये हैं। अनेक द्रव्यों के संयोगरूप अनंत द्रव्य पर्यायें हैं। आगम के आधार से इतनी बात तो हमारे मति-श्रुतज्ञान में आ जाती है; पर प्रत्येक द्रव्य और उनके गुणों की किस समय कौन सी पर्याय होगी ह्न यह तो केवलज्ञानी ही जानते हैं, जान सकते हैं।

सम्यग्दर्शन की प्राप्ति के लिए तो उक्त वस्तुव्यवस्था का आगमानुसार सामान्य ज्ञान ही पर्याप्त है। वह भी, हो तो ठीक, न हो तो भी कोई बात नहीं; पर आत्मा के कल्याण के लिए प्रयोजनभूत तत्त्वों की सामान्य जानकारी अत्यन्त आवश्यक है।

'अग्रहीत मिथ्यादृष्टि जीव इन तत्त्वार्थों के संबंध में क्या जानते हैं, वे इन्हें कैसा मानते हैं और उनकी प्रवृत्ति कैसी होती है' ह्न पण्डितजी यहाँ इस बात को विस्तार से समझाते हैं।

यह अगृहीत मिथ्यादृष्टि जीव, एक अपना आत्मा और अनंत पुद्गल परमाणु के पिण्डरूप शरीर ह्न इन सबकी मिली हुई इस मनुष्य पर्याय में अहंबुद्धि (एकत्वबुद्धि) और ममत्वबुद्धि (स्वामित्वबुद्धि) धारण करता है, कर्तृत्व और भोक्तृत्वबुद्धि धारण करता है अर्थात् यह मानता है कि बस यही मैं हूँ, मैं ही इस मनुष्य पर्याय का स्वामी हूँ और मैं ही इसका कर्ता-भोक्ता हूँ। इसकी ऐसी मान्यता ही जीव और अजीवतत्त्व संबंधी अयथार्थ श्रद्धान है, जीव-अजीव तत्त्व संबंधी भूल है।

किसी वस्तु के बारे में ऐसा मानना कि 'यह मैं ही हूँ' ह्न अहंबुद्धि है, एकत्वबुद्धि है; यह मानना कि 'यह मेरी है'ह्न ममत्वबुद्धि है, स्वामित्वबुद्धि है; ऐसा मानना कि 'मैं इसका कर्ता हूँ' ह्न कर्तृत्वबुद्धि है और ऐसा मानना कि 'मैं इसका भोक्ता हूँ' ह्न भोक्तृत्वबुद्धि है।

यह मनुष्यपर्याय एक प्राइवेट लिमिटेड कम्पनी है, जिसके अनंत शेयर हैं। उनमें इस जीव का मात्र एक शेयर है; फिर भी यह स्वयं को कम्पनी का मालिक समझता है; कर्ता-धर्ता समझता है।

यह तो ऐसा ही हुआ कि किसी लाखों शेयर वाली कम्पनी का एक शेयर खरीद कर कोई स्वयं को उसका मालिक समझने लगे, उसका कर्ता-धर्ता समझने लगे तो क्या वह उसका मालिक हो जायेगा, उस कंपनी का कर्ता-धर्ता हो जायेगा। यदि नहीं तो फिर मैं देह और जीव के पिण्डरूप शरीर का स्वामी या कर्ता-धर्ता कैसे हो सकता हूँ ?

जिसप्रकार उस कंपनी में एक शेयर वाले की कुछ भी नहीं चलती; उसीप्रकार इस मनुष्यदेह पर हमारी भी कुछ नहीं चलती। इस देह को जब जैसा परिणमना होता है, तब वैसी परिणमती है, इसमें हमारा किया कुछ भी नहीं होता। इसके एक बाल पर भी तो हमारी कुछ नहीं चलती। उस बाल को जबतक काला रहना होता है, तबतक काला रहता है और जब सफेद होना होता है, सफेद हो जाता है। जबतक रहना होता है, तबतक हमारे सिर पर सवार रहता है और जब जाना होता है, बिना अनुमति के ही चला जाता है। इसमें हमारी मर्जी से कुछ भी नहीं होता; फिर भी यह अगृहीत मिथ्यादृष्टि जीव इसमें एकत्व, ममत्व, कर्तृत्व और भोक्तृत्व धारण करता है। इसकी इसी मान्यता का नाम ही अगृहीत मिथ्यादर्शन है, ऐसा ही जानने का नाम अगृहीत मिथ्याज्ञान और इसकी यह वृत्ति और प्रवृत्ति ही मिथ्याचारित्र है।

यह अगृहीत मिथ्यादृष्टि जीव शरीर की अपेक्षा ही अन्य वस्तुओं में अपनापन करता है, उनका स्वामी और कर्ता-भोक्ता बनता है। जिनसे यह शरीर उत्पन्न हुआ, उन्हें माता-पिता मानता है; इसके शरीर से जो उत्पन्न हुए हों, उन्हें पुत्र-पुत्री मानता है; जो इस शरीर को रमण कराये, उसे रमणी (पत्नी) मानता है। इस शरीर के उपकारी को मित्र और अपकारी को शत्रु मानता है।

अधिक क्या कहें ह्न जितने भी संबंध स्वीकार करता है, वे सब इस शरीर के आधार पर ही स्वीकार करता है। इसप्रकार इस शरीर और अपने को एक मानता है। इसकी यह मान्यता ही इसकी जीव-अजीव तत्त्व संबंधी भूल है।

उक्त संदर्भ में पण्डितजी ने बहुत विस्तार से चर्चा की, जो मूलत: पठनीय है। नमूने के रूप में उसका कुछ अंश प्रस्तुत है ह्न

''तथा शरीर के परमाणुओं का मिलना-बिछुड़ना आदि होने से अथवा उनकी अवस्था पलटने से या शरीर के स्कन्ध के खण्ड आदि होने से स्थूल-कृशादिक, बाल-वृद्धादिक अथवा अंगहीनादिक होते हैं और

उनके अनुसार अपने प्रदेशों का संकोच–विस्तार होता है; यह सबको एक मानकर मैं स्थूल हूँ, मैं कृश हूँ, मैं बालक हूँ, मैं वृद्ध हूँ, मेरे इन अंगों का भंग हुआ है ह्न इत्यादिरूप मानता है।

तथा शरीर की अपेक्षा गति कुलादिक होते हैं, उन्हें अपना मानकर मैं मनुष्य हूँ, मैं तिर्यंच हूँ, मैं क्षत्रिय हूँ ह्न इत्यादिरूप मानता है। तथा शरीर का संयोग होने और छूटने की अपेक्षा जन्म–मरण होता है; उसे अपना जन्म–मरण मानकर मैं उत्पन्न हुआ, मैं मरूँगा ह्न ऐसा मानता है।[१]''

अहंबुद्धि, ममत्वबुद्धि, कर्तृत्वबुद्धि और भोक्तृत्वबुद्धि की चर्चा समयसार में भी आई है; किन्तु महापण्डित टोडरमलजी ने इनके अतिरिक्त भी एक भ्रमबुद्धि की चर्चा की है; जो अन्यत्र देखने में नहीं आती। यह उनका मौलिक चिन्तन है। यह अगृहीत मिथ्यादृष्टि जीव शरीर के संदर्भ में कभी तो यह कहता है कि 'मैं गोरा हूँ, कृष हूँ' और कभी कहता है कि मेरा शरीर गोरा है, कृष है ह्न इसप्रकार शरीर में कभी अहंबुद्धि करता है और कभी ममत्वबुद्धि करता है; भ्रम में पड़ा है; अत: निर्णय नहीं कर पाता कि शरीर मैं हूँ या शरीर मेरा है। यह उसकी भ्रमबुद्धि है।

जिनको अत्यन्त अल्पज्ञान है ह्न ऐसे एकेन्द्रियादि जीव भी इस अगृहीत मिथ्यात्व से ग्रस्त हैं और देहपिण्ड में अहंबुद्धि धारण किये रहते हैं।

इस बात को स्पष्ट करते हुए पण्डितजी लिखते हैं कि ह्न

''इन्द्रियादिक के नाम तो यहाँ कहे हैं, परन्तु इसे तो कुछ गम्य नहीं है। अचेत हुआ पर्याय में अहंबुद्धि धारण करता है।

उसका कारण क्या है? वह बतलाते हैं ह्न इस आत्मा को अनादि से इन्द्रियज्ञान है; उससे स्वयं अमूर्तिक है, वह तो भासित नहीं होता; परन्तु शरीर मूर्तिक है, वही भासित होता है। और आतमा किसी को आपरूप जानकर अहंबुद्धि धारण करे ही करे, सो जब स्वयं पृथक् भासित नहीं हुआ, तब उनके समुदायरूप पर्याय में ही अहंबुद्धि धारण करता है।[२]''

आत्मा में एक श्रद्धा नाम का गुण है, जिसका काम ही यह है कि वह किसी न किसी में अहंबुद्धि धारण करे ही करे, किसी न किसी में अपनापन स्थापित करे ही करे और इस आत्मा में एक ज्ञानगुण है, जिसका काम स्व–पर को जानना है। जगत में ऐसा कोई पदार्थ नहीं है कि जिसे जानने का सामर्थ्य इस जीव में न हो। ध्यान रहे यह श्रद्धा गुण ज्ञान गुण का अनुसरण करता है। अत: ज्ञान में जो जानने में आता है, अथवा ज्ञान जिसे निजरूप से जानता है; श्रद्धा गुण उसी में अपनापन स्थापित कर लेता है, उसी में अहंबुद्धि धारण कर लेता है।

अनादि से इस आत्मा को जो भी जानने में आता रहा है, वह सब इन्द्रियों के माध्यम से ही आता रहा है और इन्द्रियाँ मात्र रूप, रस, गंध और स्पर्शवाले पुद्गल को जानने में ही निमित्त होती हैं।

इस जीव के अत्यन्त नजदीक पौद्गलिक पदार्थ यह शरीर ही है; अत: सदा वही जानने में आता रहता है; यही कारण है कि वह इसमें अपनापन स्थापित कर लेता है।

एक गाय ने अभी–अभी एक बछडे को जन्म दिया। वह बहुत भूखा है; अत: उसे भोजन की तलाश है। यद्यपि वह जानता है कि उसके खाने की समुचित व्यवस्था यहीं–कहीं आसपास ही है तथा वह यह भी जानता है कि उसका भोजन उसकी माँ के स्तनों में है, पर वह अपनी माँ को पहिचानता नहीं है। यद्यपि उसे गाय, माँ, स्तन आदि शब्दों का ज्ञान नहीं है; तथापि तत्संबंधी भाव का भासन अवश्य है।

जहाँ उसका जन्म हुआ है; वहाँ उसकी माँ के साथ, उसी जाति की अनेक गायें खड़ी हैं। अत: वह किसी भी गाय के पास जाता है, पर कोई गाय उसे प्रेम से नहीं अपनाती। उसे अपनी माँ की तलाश है, पर करे क्या? क्योंकि उसने अभी तक अपनी माँ की शक्ल नहीं देखी है, जाने तो जाने कैसे ?

वह असमंजस में ही था कि उनमें से एक गाय उसे चाटने लगी तो वह समझ गया कि यही उसकी माँ है और वह उसमें अपना भोजन तलाशने लगा। उसे इतना तो पता था कि यहीं–कहीं माँ के पैरों के बीच ही उसका भोजन है; अत: वह आगे के पैरों के बीच मुँह मारने लगा। आखिर किसी के सहयोग के बिना ही वह सही जगह पर पहुँच गया और दूध पीने लगा। 'जो चाटे, वही माँ है' ह्न इस सिद्धान्त के आधार पर उसने अपनी माँ को तलाश लिया। इसीप्रकार जो पौद्गलिक शरीर इस जीव के ज्ञान में आया; इसने सहज ही उसमें अपनापन स्थापित कर लिया। यही उसकी जीव–अजीव तत्त्व संबंधी भूल है और यही इसका अगृहीत मिथ्यादर्शन है।

इसप्रकार हम देखते हैं कि यह अगृहीत मिथ्यादृष्टि जीव अनादिकाल से ही देह में अपनापन धारण किये है, उसी में रचा–पचा है, उसी की संभाल में व्यस्त है, उसके लिए सबकुछ करने को तैयार रहता है, भक्ष्य–अभक्ष्य का विचार किये बिना चाहे जो कुछ खाने लगता है।

एक तो इसकी ऐसी वृत्ति और प्रवृत्ति सहज ही है और फिर ऐसी शिक्षा देनेवाले लोग भी सहज मिल जाते हैं कि जो कहते हैं कि 'काया राखे धरम है', 'शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम् ह्न शरीर ही एकमात्र धर्म का साधन है' इसलिए इसे संभाल कर रखें।

लोगों की ऐसी बातें सुनकर इसकी अनादिकालीन मिथ्या मान्यता पुष्ट हो जाती है; इसकारण यह गृहीत मिथ्यादृष्टि भी बन जाता है।

सात तत्त्वों को समझने में जिन भूलों की संभावना है; वह एकेन्द्रियादि में कैसे संभव हैं; क्योंकि वे तो सात तत्त्वों के नाम भी नहीं जानते; जान भी नहीं सकते। यह एक ऐसी आशंका है कि जिसका निराकरण महापण्डित टोडरमलजी जैसे प्रतिभाशाली विद्वान ही कर सकते थे और उन्होंने स्वयं शंका उपस्थित कर इसका सोदाहरण समाधान प्रस्तुत किया।

'ज्ञान का विकास हो जाने के बाद भी इसका उक्त अज्ञान समाप्त क्यों नहीं होता' ह्न इस संदर्भ में भी उन्होंने चिन्तन किया था; जिसे वे इसप्रकार प्रस्तुत करते हैं ह्न

''तथा अपने को और शरीर को निमित्त–नैमित्तिक संबंध बहुत हैं, इसलिए भिन्नता भासित नहीं होती। और जिस विचार द्वारा भिन्नता भासित होती है, वह मिथ्यादर्शन के जोर से हो नहीं सकता; इसलिए पर्याय में ही अहंबुद्धि पायी जाती है।[१]'' **(क्रमश:)**

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, पृष्ठ–८१२. वही, पृष्ठ–८१

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, पृष्ठ–८२

17 मार्च 2009, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-61 / 2009-11

## जयपुर महानगर शाखा का गठन

**जयपुर :** यहाँ अ. भा. जैन युवा फैडरेशन की जयपुर महानगर शाखा का गठन एवं शपथ ग्रहण समारोह 9 मार्च, 09 को आयोजित किया गया।

इस अवसर पर डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल की अध्यक्षता में सभा का आयोजन किया गया। मुख्यअतिथि के रूप में फैडरेशन के राष्ट्रीय मंत्री श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री पीयूषजी शास्त्री, राज.प्रदेश अध्यक्ष श्री उत्तमचन्दजी भारिल्ल अजमेर, प्रदेश प्रभारी श्री जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर एवं प्रदेश उपाध्यक्ष श्री संजीवजी गोधा मंचासीन थे। कार्यक्रम का संचालन जयपुर जिला प्रतिनिधि श्री राजेशजी शास्त्री शाहगढ ने किया।

प्रदेशाध्यक्ष श्री उत्तमचन्दजी भारिल्ल ने शाखा के अध्यक्ष श्री संजयजी सेठी, मंत्री डॉ. भागचन्दजी जैन, कोषाध्यक्ष श्री परेशजी शास्त्री, प्रचार मंत्री श्री दिनेशजी जैन, सांस्कृतिक मंत्री श्री नितेशजी शास्त्री, सह-सांस्कृतिक मंत्री श्री संजीवजी शास्त्री के अतिरिक्त अन्य सदस्यों के रूप में श्री संजीवजी बालचन्दानी, श्री अनिलजी शास्त्री, श्री प्रशान्तजी शास्त्री एवं श्री विजयजी शास्त्री को विधिवत् शपथ ग्रहण कराई। ●

## शोक समाचार

1. **नाई की मंडी आगरा निवासी श्रीमती शरबती देवी जैन** ध. प. श्री शिखरचंदजी जैन का दिनांक 6 फरवरी, 09 को शांतपरिणामों पूर्वक देहावसान हो गया। आप धार्मिक विचारोंवाली महिला थीं।आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक को 501/-रुपये प्राप्त हुये हैं।

2. **जयपुर निवासी पण्डित श्री संतोषकुमारजी झांझरी** का दिनांक 24 फरवरी को 79 वर्ष की आयु में शांत परिणामों से समाधिपूर्वक देहविलय हो गया है। आप चारों अनुयोगों के ज्ञाता विशिष्ट विद्वान थे। श्री दिगम्बर जैन तेरहपंथी बड़ा मंदिर, जौहरी बाजार (टोडरमलजी का मंदिर) में लगभग 40 वर्षों तक प्रतिदिन आपके प्रवचनों का लाभ समाज को मिला। आपके चिर वियोग से स्थानीय जैन समाज को अपूरणीय क्षति हुई है। आपकी स्मृति में 500/-रुपये प्राप्त हुये हैं; एतदर्थ धन्यवाद !

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हों ह्न यही भावना है।

## डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

| | | |
|---|---|---|
| 22 से 24 मार्च 09 | जयपुर | राज.विश्वविद्यालय संगोष्ठी (जैनधर्म में ध्यान) |
| 5 अप्रैल | ध्रुवधाम बांसवाड़ा | दीक्षान्त समारोह |
| 10 से 11 अप्रैल | बेगूँ (चित्तौडगढ) | जिनमंदिर शिलान्यास |
| 23 से 29 अप्रैल, 09 | हस्तिनापुर | पंचकल्याणक |
| 30 अप्रैल, 09 | इन्दौर | इन्द्रध्वज विधान |
| 1 से 5 मई, 09 | जयपुर | विधान-बड़जात्या परिवार |
| 9 से 13 मई, 09 | राजकोट | पंचकल्याणक |
| 15 से 25 मई, 09 | कोलारस | प्रशिक्षण शिविर |
| 29 मई से 22 जुलाई | विदेश प्रवास | धर्मप्रचारार्थ |
| 26 जुलाई से 4 अगस्त | जयपुर | आध्यात्मिक शिविर |

## ध्यान यत्नसाध्य नहीं; सहज साध्य

डॉ. भारिल्ल की नवीनतम कृति '**ध्यान का स्वरूप**' को पढकर **डॉ.प्रेमचन्दजी रांवका**, पूर्वाचार्य: महाराजा संस्कृत कॉलेज, जयपुर लिखते हैं कि ह्न

अध्यात्म चिन्तक, विद्वान्मनीषी डॉ. हुकमचंद जी भारिल्ल द्वारा प्रणीत 'ध्यान का स्वरूप' लघु पुस्तक, जिनागम के परिप्रेक्ष्य में उनके द्वारा रचित साहित्य-श्रृंखला में एक और अभिनय कृति है। इस कृति को अस्सी मिनट की एक बैठक में आद्योपान्त पढकर आत्म विभोर हो गया।

इसमें डॉ. भारिल्ल की प्रज्ञाछैनी में तत्त्वार्थ सूत्र, द्रव्य संग्रह, छहढाला जैसे जैनागमों को प्रमाण-पुरस्सर एवं रोचक दृष्टांतों से आत्मध्यान जैसे विषय को सभी स्तरीय पाठकों के लिये हस्तामलक रूप में प्रस्तुत किया है। सीधे सरल भाव-भाष्य में रचित यह कृति ध्यान के स्वरूप को सहज ही बोधगम्य और आत्मसात करने योग्य है।

विद्वान लेखक का कथन समीचीन है कि ध्यान यत्न साध्य नही; सहज साध्य है। ध्यान तो व्यक्तिगत चीज है। उसके लिये शान्त-एकान्त स्थान चाहिए। आवश्यकता ध्यान के अभ्यास की नही, ध्येय को बदलने की है। वस्तुत: ध्यान को सीखने समझने की आवश्यकता नही; क्योंकि जिस वस्तु में अपनापन आ जाता है, जिसके प्रति रुचि जाग्रत होती है, उसका ध्यान सहज ही होता है।

इसप्रकार यह कृति ध्यान के स्वरूप को समझने में गागर में सागर स्वरूप है। इसमें डॉ. भारिल्ल साहब का आत्मानुचिन्तन पक्ष प्रस्फुटित हुआ है।आपकी आध्यात्मिक लेखनी को प्रणाम !

जयपुर निवासी श्री रमेशजी-तारादेवी पाण्ड्या द्वारा दिनांक 5 फरवरी को जन्मे अपने प्रपौत्र (सुपुत्र श्री राहुल-रुचिका) की खुशी के प्रसंग पर ज्ञानप्रचार हेतु 500/- रुपये प्राप्त हुये; एतदर्थ धन्यवाद !

**प्रकाशन तिथि : 13 मार्च 2009**

**प्रति,**

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, डबल एम.ए.(जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

*यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -*
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
**फोन :** (0141) 2705581, 2707458
**E-Mail :** ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127